IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

निर्देशक प्रस्तुतकर्त्री

डॉ. मनीष सैनी

कमलेश ा कुमारी असिस्टेटं प्रोफेसर

एम.एड.छात्रा

सारांश – प्रकृति नित्य परिवर्तनशील है। प्रत्येक वस्तु पर परिवर्तन का प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है। शिक्षण प्रक्रिया भी इस परिवर्तन से परे नहीं है। आज का युग तकनीक प्रयाग युग है अत एव परम्परिक शिक्षण विधि की आवश्यकता महसूस होने लगी है, इसलिए शाधे ाकर्ता ने बहुमाध्यम उपागम का विद्याथ्रियो ं के व्यक्तित्व एव ंशैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाल` प्रभाव का अयध्ययन किया है। अध्ययन मे ं प्रयोगात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया। कक्षा ग्यारहवी के 100 विद्यार्थियो ं के दो समूह बनाकर एक समूह को परम्परागत शिक्षण विधि व दूसरे समूह को बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर शिक्षको ं ने बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी गयी व छात्रो ं की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ी। बहुमाध्यम उपाग का प्रभाव छात्रो ंके व्यक्तित्व पर सकारात्मक पड़ा है। अतएव कक्षा शिक्षण को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाने के लिए बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण परमपरागत शिक्षण विधि की तुलना मे ं छात्रो ं के लिए लाभप्रद है। प्रस्तावना – किसी भी देश की आर्थिक समृद्धि मे ं विज्ञान और तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान होता है, यह तथ्य वर्तमान वैश्विक परिदृश्य मे ं स्पष्टतः दृष्टिगाचे र हो रहा है। नई पीढ़ी अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण पूर्व ज्ञान के आधार पर नित नये आविष्कारो ं को जन्म दे रही है। इन आविष्कारो ं की श्रृंखला मे ं कक्षा शिक्षण अध्ययन अध्यापन मे ं बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान परिदृश्य मे ं इसने शिक्षा के परिक्षेत्र को प्रभावित किया है तथा यह शिक्षा एवं मानव जीवन मे ं महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। समस्या का औचित्य – बहुमाध्यम उपागम मे ं बहुमाध्यम शब्द एक से अधिक माध्यम की ओर संकेत करता है। इस उपागम मे ं एक से अधिक तकनीको ं और साधनो ं का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु को छात्रो ं तक पहुंचान` के लिए शिक्षक के द्वारा अनेक माध्यमो ं का प्रयोग किया जाता है।

जेसे व्याख्यान, ओ.एच.पी., टेप रिकार्डर स्लाइड, मॉड्यूल, टी वी, कम्प्यूटर, पाठ्यपुस्तक, फिल्म, रेडियो, सेमीनार, कार्यशाला, विभिन्न विधयाँ, प्रणालियां इत्यादि।

तकनीकी शब्दो ं का परिभाषीकरण –

1. उच्च माध्यमिक स्तर – उच्च माध्यमिक स्तर से आशय है कि कक्षा 10 वीं उतीर्ण करने के बाद कक्षा 11 व 12 मे ं अध्ययनरत विद्यार्थियो ं को सम्मिलित किया गया है।

2. विद्यार्थी – सरल शब्दो ं मे ं ज्ञान प्राप्त करने वाल ं विद्यार्थी कहलाता है। विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक होता है तथा शिक्षक के सम्पर्क मे ं आकर वांछित अनुभवो ं के द्वारा प्राप्त करता ह।ै

शोध के उद्देश्य –

1. बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता की जानकारी प्राप्त करना।
2. बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियो ं के व्यक्तितव प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की विधि –

प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या – प्रस्तुत अध्ययन मे ं जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियो ं को जनसंख्या के रूप मे ं चयन किया गया है।

शोध मे ं प्रयुक्त न्यादर्श – प्रस्तुत शाध े ा हेतु कक्षा 11 वीं के 100 विद्यार्थियो ं का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया तथा उन्हे ं निमन दो समूहो ं मे ं बाँटा गया –

1. प्रयोगात्मक समूह – 50 विद्यार्थी बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण के लिए।
2. नियंत्रित समूह – 50 विद्यार्थी परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण के लिए।

शोध मे ं प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन मे ं शाध े ाकर्त्री द्वारा निम्न उपकरणो ं का उपयोग किया गया है –

1. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – प्रस्तुत शाध े ा कार्य हेतु शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के लिय ं शाध े ार्थी ने स्वनिर्मित वस्तुनिष्ठ शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया।
2. व्यक्तित्व मापनी परीक्षण – विद्यार्थियो ं के व्यक्तित्व के मापन Dr. Arun Kumar Singh)Patna) & Ashish Kumar Singh द्वारा Differential Personality Inventory (D P I – SS) Hindi Version का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ – पस्तुत शाध े ा कार्य में सांख्यिकी के रूप मे ं निम्न का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. टी परीक्षण
3. टी मलू य

शोध का परीसीमांकन –

1. प्रस्तुत शाध े ा कार्य जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षत्रे तक सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य मे ं जयपुर जिले के चहरी क्षेत्र के दो सरकारी एवं दो गैर सरकारी विद्यालयों

तथा ग्रामीण क्षेत्र के दो राजकीय व दो निजी विद्यालयां` तक ही सीमित है।

3. प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिल` के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं तक ही सीमित रखा गया है।

4. प्रस्तुत शोधकार्य मे ं न्यादर्श के रूप मे ं माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओ ं को लके र अध्ययन कार्य किया गया है। आँकड़ो ं का विश्लेषण –

समूह	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
परम्परागत शिक्षण समूह	50	83.9	5.003	3.486	स्वीकृत
बरखा पुस्तकमाला द्वारा अध्ययनत बालक	50	88.0	6.65		

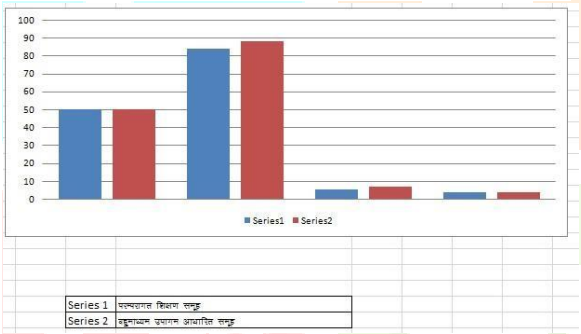

परम्परागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियो ं के व्यक्तित्व हेतु सी आर मान 3.486 प्राप्त हुआ। यह मान 98 डी एफ तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.98 अधिक है। अतः दोनों समूहों के मध्यमान में सार्थक अंतर है। अतः इस आधार पर परिक्लपना स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण समूह के विद्यार्थियो ं एवं परम्परागत शिक्षण समूह के विद्यार्थियो ं के व्यक्तित्व मे ं अंतर पाया गया।

शोध निष्कर्ष –

1. शिक्षको ं की दृष्टि से शिक्षण प्रक्रिया मे ं बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी गई।
2. परम्परागत एवम बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि मे ं सार्थक अंतर पाया गया।
3. परम्परागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियो ं के व्यक्तित्व मे ं सार्थक अंतर पाया गया। बहुमाध्यम उपागम शिक्षण का प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियो ं के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया।

सुझाव –

(1) शिक्षण में बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग एक सशक्त साधन है। इससे विद्यार्थियो, पालको, शिक्षको ं व जन सामान्य को भी परिचित कराना आवश्यक है। शिक्षको ं को इस उपागम को कक्षा शिक्षण मे ं उपयोग करने हेतु प्रेरित करना लाभप्रद होगा।

(2) शासन शिक्षको ं को निर्देशित करे कि आधुनिक शिक्षण पद्धतियो, नवीन तकनीकी, कौशलो ं का प्रयोग करते हुए छात्रो ं को ऐसी शिक्षा प्रदान करे, जिससे विद्यार्थियो ं के उपलब्धि स्तर मे ं वृद्धि के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व का भी विकास हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

(1) अग्रवाल वंदना (2005) : पारम्परिक व्याख्यान विधि एव कम्प्यूटर सहायतित शिक्षण की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन। (2) शर्मा, पूजा (2010–11) पारमपरिक व्याख्यान विधि एव ं कम्प्यूटर सहायतित शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन।